Vagisha International Multidisciplinary Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal)
Volume-01, Issue-05, October-2026| ISSN: 3139-2776 (online)
Available online at:https://vimrj.com/
DOI: https://doi.org/10.67185/vimrj.v1i5.42

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्मविश्वास विकास में विद्यालयी वातावरण की भूमिका

मनीष कुमार

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोभी, जौनपुर (उ0प्र0)

e-mail : manishsdp123@gmail.com

Received: 07 Sepetember 2026 | **Accepted:** 14 Sepetember 2026 | **Published:** 25 October 2026

सारांश

माध्यमिक शिक्षा स्तर पर छात्र अपने व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में निर्णायक चरण में होते हैं। इस समय आत्मविश्वास उनके समग्र विकास का महत्वपूर्ण आधार बनता है। आत्मविश्वास का निर्माण अनेक कारकों से प्रभावित होता है, जिनमें विद्यालयी वातावरण प्रमुख है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि विद्यालय का भौतिक, सामाजिक और शैक्षणिक वातावरण किस प्रकार विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर सकारात्मक अथवा नकारात्मक प्रभाव डालता है। अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर यह पाया गया कि सहयोगात्मक, प्रेरणादायक तथा संरक्षित विद्यालयी वातावरण आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक होता है।

मुख्य शब्द : आत्मविश्वास, विद्यालयी वातावरण, माध्यमिक शिक्षा, छात्र विकास, मनोवैज्ञानिक वातावरण.

परिचय

मानव व्यक्तित्व के समग्र विकास में आत्मविश्वास एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है। आत्मविश्वास वह मानसिक शक्ति है, जो व्यक्ति को स्वयं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने, निर्णय लेने, अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखने तथा जीवन की चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देता है। विशेषतः किशोरावस्था, जो माध्यमिक शिक्षा स्तर (कक्षा 9वीं–10वीं) की उम्र होती है, व्यक्तित्व निर्माण का संवेदनशील और निर्णायक काल माना जाता है। इस काल में विद्यार्थी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक परिवर्तनों से गुजरते हैं, जहाँ उन्हें एक समर्थ मार्गदर्शन, सकारात्मक वातावरण और प्रेरणादायक सहयोग की आवश्यकता होती है। विद्यालय, विद्यार्थी के जीवन का दूसरा घर माना जाता

है, जहाँ वह अपने समय का अधिकांश भाग व्यतीत करता है। यह केवल ज्ञान प्राप्ति का स्थान नहीं होता, बल्कि एक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक मंच भी होता है, जहाँ विद्यार्थी विभिन्न अनुभवों, गतिविधियों, संबंधों और व्यवस्थाओं के संपर्क में आता है। यही विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को या तो सशक्त बनाता है या उसे कुंठित करता है। यदि विद्यालय में सहायक, प्रेरक, सुरक्षित और संवादशील वातावरण हो, तो विद्यार्थी आत्म अभिव्यक्ति में न केवल स्वतंत्रता अनुभव करता है, बल्कि उसमें आत्म–गौरव एवं आत्म सम्मान की भावना भी उत्पन्न होती है।

इसके विपरीत यदि विद्यालय का वातावरण भय, अस्वीकृति, भेदभाव अथवा उपेक्षा पर आधारित हो, तो विद्यार्थी संकोच, हीन भावना और आत्मविश्वास की कमी से ग्रसित हो सकता है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थी भविष्य की शैक्षिक दिशा, कैरियर विकल्प और सामाजिक पहचान को लेकर चिंतनशील होते हैं। ऐसे समय में शिक्षक का सहयोगी व्यवहार, कक्षा में सहभागिता के अवसर, मूल्य आधारित शिक्षण, सकारात्मक प्रोत्साहन, समतामूलक संबंध और प्रेरक मूल्यांकन पद्धति उन्हें आत्मविश्वासी बनाने में अत्यंत सहायक सिद्ध होते हैं। विद्यालय में यदि संवादात्मक, समावेशी और प्रोत्साहनपरक वातावरण उपलब्ध हो, तो विद्यार्थी अपने विचारों को व्यक्त करने, गलतियों से सीखने और स्वयं को निखारने में सहज अनुभव करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि माध्यमिक विद्यालयों के वातावरण में कौन–कौन से तत्व विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को प्रभावित करते हैं तथा कैसे एक सकारात्मक विद्यालयी वातावरण उनके व्यक्तित्व के इस महत्वपूर्ण पक्ष को पुष्ट करता है। यह अध्ययन विशेष रूप से इस तथ्य की पुष्टि करता है कि विद्यालयी वातावरण केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक अभिवृत्ति और आत्मिक शक्ति के विकास का भी माध्यम है।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

कुमार एवं नामदेव (2026) ने "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर विद्यालयी वातावरण का प्रभाव" विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का विश्लेषण करना था। निष्कर्ष में विद्यालयी वातावरण और मानसिक स्वास्थ्य के बीच धनात्मक सह–संबंध पाया गया तथा वातावरण के विभिन्न स्तरों का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर सार्थक प्रभाव सामने आया। कुशवाहा एवं चौधरी (2024) ने "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यालयी वातावरण तथा शैक्षिक समायोजन के मध्य सह–संबंध का अध्ययन" शीर्षक से शोध प्रस्तुत किया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार विद्यालय में शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, सहपाठियों के साथ व्यवहार, अनुशासन तथा सहयोगपूर्ण परिस्थितियाँ

विद्यार्थियों के विद्यालयी अनुभव को प्रभावित करती हैं। अनुकूल वातावरण में विद्यार्थी अपनी समस्याएँ साझा करने, शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने और दूसरों के साथ समायोजन स्थापित करने में अधिक सहज अनुभव कर सकते हैं। ये परिस्थितियाँ आत्मविश्वास के विकास के लिए भी सहायक हो सकती हैं। हालाँकि, उपलब्ध अभिलेख में अध्ययन के विस्तृत परिणामों का पर्याप्त विवरण नहीं मिलता, इसलिए इसके निष्कर्षों के बारे में इससे आगे कोई निश्चित दावा करना उचित नहीं होगा।

सविता एवं सिंह (2024) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन विषय पर शोध किया। शोधकर्ताओं ने विद्यालयी वातावरण के अंतर्गत शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, सहपाठियों का प्रभाव, शैक्षिक संसाधन तथा प्रशासनिक नीतियों जैसे पक्षों पर विचार किया। अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता और शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक अथवा नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। शेरर, हैंक एवं प्रेकल (2023) ने "किशोरों के आत्म–सम्मान और सामान्य शैक्षणिक आत्म–अवधारणा का विकास रू कक्षा का अनुभव किया गया वातावरण" शीर्षक से अध्ययन प्रकाशित किया। परिणाम में ज्ञात हुआ कि कक्षा के वातावरण की विभिन्न विशेषताएँ विद्यार्थियों की आत्म–सम्मान एवं शैक्षिक आत्म–अवधारणा में होने वाले परिवर्तनों से संबंधित थीं। विशेष रूप से शिक्षक का विद्यार्थियों पर ध्यान और सामाजिक एवं उपलब्धि संबंधी दबाव आत्म–सम्मान में परिवर्तन के महत्त्वपूर्ण पूर्वानुमानक पाए गए।

वर्नर–फिलियन (2023) ने "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में विद्यालय के वातावरण की धारणा और विद्यालय के ग्रेडरू स्व–निर्धारित अभिप्रेरणा का मध्यस्थ प्रभाव" शीर्षक से अध्ययन किया। निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण की अनुभूति शैक्षिक अभिप्रेरणा में वृद्धि से संबंधित थी तथा अभिप्रेरणा में वृद्धि का संबंध विद्यार्थियों के अंकों में सुधार से पाया गया। अंजुम एवं भट (2022) ने "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का विद्यालयी वातावरण और आत्म–सम्मान" शीर्षक से अध्ययन किया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा अनुभव किए गए विद्यालयी वातावरण में सार्थक अंतर था। दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान में भी अंतर पाया गया। इसके अतिरिक्त, विद्यालयी वातावरण और आत्म–सम्मान के बीच सार्थक धनात्मक संबंध सामने आया।

डुडोविट्ज (2021) ने "किशोरों के सामाजिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के साथ विद्यालयी वातावरण का दीर्घकालिक संबंध" शीर्षक से अध्ययन प्रकाशित किया। परिणामों में पाया गया कि ऐसा विद्यालयी वातावरण जिसमें पर्याप्त सहयोग और स्पष्ट अनुशासन दोनों मौजूद हों, विद्यार्थियों में बाद के समय में

अधिक आत्म–प्रभावकारिता एवं दृढ़ता तथा कम अवसाद, निराशा और तनाव से संबंधित था। जिसबर्ग एवं श्वाब्स्की (2021) ने "विद्यालय का वातावरण, शैक्षणिक आत्म–क्षमता और विद्यार्थियों की उपलब्धि" शीर्षक से अध्ययन किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि पारस्परिक संबंध और विद्यालय से जुड़ाव के सकारात्मक पक्ष शैक्षिक आत्म–प्रभावकारिता से धनात्मक रूप से संबंधित थे। आत्म–प्रभावकारिता का संबंध उपलब्धि के विभिन्न मापों से भी सकारात्मक पाया गया।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की आत्मविश्वास

आत्मविश्वास किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का आधारभूत एवं अत्यंत प्रभावशाली पक्ष होता है, जो यह निर्धारित करता है कि वह अपने विचारों, निर्णयों, क्षमताओं और कृत्यों के प्रति कितना विश्वास रखता है। आत्मविश्वास व्यक्ति को चुनौतियों का सामना करने, समस्याओं का समाधान खोजने, स्वतंत्र निर्णय लेने तथा सामाजिक और शैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करने में समर्थ बनाता है। माध्यमिक शिक्षा स्तर सामान्यतः 13 से 16 वर्ष की उम्र का काल होता है, जो किशोरावस्था का संवेदनशील चरण है। इस चरण में विद्यार्थी मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा भावनात्मक दृष्टि से तीव्र परिवर्तनों का अनुभव करते हैं। उनके सोचने–समझने की क्षमता विकसित होती है, वे अपने आत्ममूल्यांकन की प्रक्रिया में प्रवेश करते हैं और उन्हें समाज में अपनी पहचान स्थापित करने की इच्छा प्रबल रूप से महसूस होती है। ऐसे समय में आत्मविश्वास एक मार्गदर्शक शक्ति की तरह कार्य करता है।

इस स्तर पर यदि विद्यार्थी में आत्मविश्वास पर्याप्त मात्रा में विकसित होता है, तो वह न केवल शैक्षिक गतिविधियों में अग्रणी भूमिका निभाता है, बल्कि सह–पाठयक्रम गतिविधियों, जैसे– वाद–विवाद, भाषण, खेलकूद, समूह कार्य आदि में भी सक्रिय भागीदारी करता है। वह अपने विचारों को स्पष्टता से प्रस्तुत करता है, आलोचना का सकारात्मक रूप में सामना करता है और विफलताओं से सीखकर आगे बढ़ता है। आत्मविश्वासी विद्यार्थी निर्णय लेने में हिचकिचाते नहीं हैं और जीवन में अपने लक्ष्य की ओर आत्मबल से अग्रसर होते हैं। वहीं दूसरी ओर, आत्मविश्वास की कमी विद्यार्थियों में संकोच, हीनभावना, आत्म–संदेह, सामाजिक भय एवं निष्क्रियता उत्पन्न करती है। ऐसे विद्यार्थी कक्षा में प्रश्न पूछने या उत्तर देने से कतराते हैं, वे समूहों में समाहित नहीं हो पाते और नई जिम्मेदारियों से बचते हैं। यह कमी उनके शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती है तथा दीर्घकाल में उनके कैरियर एवं व्यक्तित्व निर्माण में बाधा बन सकती है।

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के निर्माण में अनेक घटक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें पारिवारिक सहयोग एवं संवाद, विद्यालयी वातावरण, शिक्षकों का व्यवहार, सहपाठियों

का समर्थन, व्यक्तिगत उपलब्धियाँ तथा आंतरिक प्रेरणा प्रमुख हैं। परिवार से प्राप्त स्नेह, प्रोत्साहन एवं सहयोग विद्यार्थियों में सुरक्षा और आत्मविश्वास की भावना विकसित करते हैं। इसी प्रकार, सकारात्मक विद्यालयी वातावरण, शिक्षकों का सहयोगात्मक एवं प्रोत्साहनपूर्ण व्यवहार तथा सहपाठियों से मिलने वाला समर्थन विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने और स्वतंत्र रूप से विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित करता है। शैक्षिक, खेलकूद एवं अन्य सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों में प्राप्त व्यक्तिगत उपलब्धियाँ भी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को सुदृढ़ करती हैं। इसके अतिरिक्त, आंतरिक प्रेरणा विद्यार्थियों को कठिनाइयों का सामना करने, निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास करने तथा असफलताओं से सीखने की क्षमता प्रदान करती है। इस प्रकार, इन सभी घटकों का समन्वित प्रभाव माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

माध्यमिक विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण

विद्यालयी वातावरण किसी भी विद्यालय की पहचान और गुणवत्ता का मूल आधार होता है। यह केवल भवन, कक्षाएँ और भौतिक सुविधाओं तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें वहाँ का शैक्षिक, सामाजिक, भावनात्मक, भौतिक और नैतिक परिवेश भी सम्मिलित होता है। माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी मानसिक, बौद्धिक तथा सामाजिक रूप से परिपक्व होने की प्रक्रिया में होते हैं। ऐसे समय में विद्यालय का वातावरण उनके व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धियों के विकास में अत्यंत निर्णायक भूमिका निभाता है।

माध्यमिक विद्यालयों में प्रभावशाली विद्यालयी वातावरण का सर्वप्रथम संकेत वहाँ की शैक्षिक व्यवस्था से मिलता है। इसमें पाठ्यक्रम की प्रभावी योजना, समयबद्ध शिक्षण, अनुभवी एवं प्रेरक शिक्षकों की भूमिका, शिक्षण विधियों की विविधता और विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता सम्मिलित होती है। जहाँ विद्यार्थियों को खुलकर प्रश्न पूछने, उत्तर देने और विचार रखने का अवसर मिलता है, वहाँ उनका आत्मविश्वास और जिज्ञासा दोनों बढ़ते हैं। विद्यालयी वातावरण में शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच के संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी भावनात्मक रूप से संवेदनशील होते हैं। यदि शिक्षक उन्हें समझें, उनका मार्गदर्शन करें, सम्मान दें और प्रेरित करें, तो विद्यार्थी विद्यालय को एक सहयोगी और सुरक्षित स्थान के रूप में अनुभव करते हैं। इसके विपरीत कठोर, तिरस्कारपूर्ण या उपेक्षात्मक व्यवहार वातावरण को नकारात्मक बना सकता है।

माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के बीच होने वाले आपसी संबंध, समूहों में काम करने की प्रवृत्ति, मित्रता, सहयोग, प्रतिस्पर्धा तथा नेतृत्व के अवसर विद्यालयी वातावरण का सामाजिक पक्ष निर्मित करते हैं। यदि विद्यालय में सहयोगात्मक और समावेशी संस्कृति हो, तो विद्यार्थी मानसिक रूप से अधिक

सुरक्षित और आत्मविश्वासी बनते हैं। विद्यालय का वह वातावरण, जिसमें विद्यार्थियों की भावनाओं को समझा और महत्व दिया जाए, उन्हें अपनी पहचान बनाने के अवसर मिलें, वह एक सकारात्मक भावनात्मक वातावरण कहलाता है। साथ ही, यदि विद्यालय में ईमानदारी, अनुशासन, दायित्वबोध, समय पालन आदि मूल्यों पर बल दिया जाए, तो नैतिक वातावरण का निर्माण होता है, जो विद्यार्थियों के आंतरिक विकास को प्रोत्साहित करता है।

विद्यालय के भवन, कक्षाएँ, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, खेल के मैदान, शौचालय, पेयजल व्यवस्था, सफाई और सुरक्षा भी विद्यालयी वातावरण के अंतर्गत आते हैं। एक स्वच्छ, शांत, सुव्यवस्थित और सुरक्षित परिसर न केवल स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, बल्कि यह विद्यार्थियों की एकाग्रता और सकारात्मक दृष्टिकोण को भी बढ़ाता है। विद्यालय का प्रशासन यदि पारदर्शी, अनुशासित और लोकतांत्रिक हो, तो विद्यार्थी उसमें विश्वास करते हैं। यदि उनके सुझावों, शिकायतों और अभिव्यक्तियों को महत्व दिया जाए, तो यह वातावरण को और अधिक सहयोगात्मक बनाता है।

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को प्रभावित करने वाले कारक

आत्मविश्वास वह मानसिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति स्वयं की क्षमताओं, विचारों एवं निर्णयों पर विश्वास करता है। यह गुण विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। आत्मविश्वास न केवल शिक्षा क्षेत्र में सफलता का आधार बनता है, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सक्रियता, नेतृत्व क्षमता, साहस और आत्मनिर्भरता को भी बढ़ाता है। विद्यार्थियों का आत्मविश्वास विभिन्न आंतरिक और बाह्य कारकों से प्रभावित होता है। नीचे इन प्रमुख कारकों का विस्तृत गद्य रूप में वर्णन प्रस्तुत हैरू

- **पारिवारिक वातावरण :** विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के निर्माण में परिवार की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। यदि माता–पिता प्रोत्साहन देने वाले, स्नेही और सहयोगी होते हैं, तो बालक में आत्म–गौरव और आत्मबल की भावना विकसित होती है। जैसे– माता–पिता का समर्थन, भावनात्मक सुरक्षा, संवाद की खुली प्रवृत्ति, अनुशासित किन्तु दमन रहित परवरिश आत्मविश्वास को मजबूती प्रदान करते हैं। इसके विपरीत, निरंतर आलोचना, तुलना और अस्वीकृति की भावना आत्मविश्वास को कुंठित कर सकती है।
- **विद्यालयी वातावरण :** विद्यालय वह स्थान है जहाँ विद्यार्थी सामाजिकता, शैक्षिक मूल्य और आत्म–अभिव्यक्ति के अवसर प्राप्त करता है। विद्यालय का वातावरण यदि सहायक, प्रेरक और संवादात्मक होता है, तो यह आत्मविश्वास के विकास में सहायक होता है। जैसे–शिक्षक का व्यवहार, कक्षा की भागीदारी की स्वतंत्रता, सकारात्मक प्रतिस्पर्धा, सहपाठियों के साथ

सहयोगपूर्ण संबंध। ये सभी विद्यालयी वातावरण के घटक हैं, जो आत्मविश्वास को प्रभावित करते हैं।

- **शैक्षिक उपलब्धियाँ और अनुभव :** विद्यार्थी के पूर्व अनुभव और उसकी शैक्षिक उपलब्धियाँ उसके आत्मविश्वास पर गहरा प्रभाव डालती हैं। जब कोई विद्यार्थी किसी परीक्षा, प्रतियोगिता या परियोजना में सफलता प्राप्त करता है, तो उसमें यह विश्वास उत्पन्न होता है कि वह भविष्य में भी सफल हो सकता है। वहीं असफलताएँ यदि बिना प्रोत्साहन और मार्गदर्शन के मिलें, तो वे आत्मविश्वास को कमजोर कर सकती हैं।
- **शिक्षकों का व्यवहार :** शिक्षक विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक, प्रेरक और आदर्श होते हैं। शिक्षक का सहयोगात्मक, संवेदनशील और सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थी के आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करता है। यदि शिक्षक विद्यार्थी को उसकी कमियों को सुधारने का अवसर देते हैं, उसकी प्रगति की सराहना करते हैं, तो विद्यार्थी स्वयं को योग्य और समर्थ महसूस करता है।
- **सहपाठी समूह और सामाजिक संबंध :** विद्यार्थियों का आत्मविश्वास उनके सहपाठियों के साथ संबंधों पर भी निर्भर करता है। यदि वह समूह में स्वीकृत, सम्मानित और सहयोग प्राप्त करता है, तो उसमें सामाजिक आत्मविश्वास उत्पन्न होता है। परंतु यदि उसे उपेक्षा, उपहास या तिरस्कार का अनुभव होता है, तो उसका आत्मबल टूट सकता है।
- **मीडिया और समाज का प्रभाव :** आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया, टीवी, फिल्में और समाज की अपेक्षाएँ भी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को प्रभावित करती हैं। यदि विद्यार्थी में दूसरों की तुलना में कम संसाधन या क्षमताएँ होने की भावना उत्पन्न होती है, तो यह आत्मविश्वास को हानि पहुँचा सकती है। वहीं, प्रेरणादायक कहानियाँ, व्यक्तित्व, या अनुभव आत्मबल बढ़ा सकते हैं।
- **प्रेरणा और लक्ष्यबद्धता :** जो विद्यार्थी लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, वे सामान्यतः अधिक आत्मविश्वासी होते हैं। आत्म–प्रेरणा और आत्मनियंत्रण आत्मविश्वास के निर्माण में सहायक होते हैं। प्रेरक वातावरण और सफलता की छोटी–छोटी उपलब्धियाँ उन्हें मानसिक रूप से सशक्त बनाती हैं।

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के विकास में विद्यालयी वातावरण की भूमिका

माध्यमिक शिक्षा स्तर वह संवेदनशील और निर्णायक काल होता है जिसमें विद्यार्थी न केवल शैक्षिक ज्ञान अर्जित करते हैं, बल्कि अपने व्यक्तित्व, विचारधारा, आत्म–छवि तथा सामाजिक समझ का

भी विकास करते हैं। इस अवस्था में वे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक परिवर्तनों से गुजरते हैं। इस परिवर्तनशील अवस्था में आत्मविश्वास विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं विकास का एक आधारभूत तत्व होता है, जो उन्हें नई परिस्थितियों से निपटने, स्वतंत्र निर्णय लेने, गलतियों से सीखने, और सामाजिक व शैक्षिक चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम बनाता है।

- **शिक्षकों का सहयोगात्मक व्यवहार :** शिक्षक विद्यालयी वातावरण के निर्माता और प्रेरक होते हैं। जब शिक्षक विद्यार्थियों के विचारों को महत्व देते हैं, उनकी सफलताओं की प्रशंसा करते हैं, गलतियों पर दंड के बजाय सुधार का अवसर देते हैं, तो विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित और समर्थ अनुभव करते हैं। शिक्षक द्वारा प्रदत्त विश्वास ही विद्यार्थी के आत्मविश्वास की नींव बनता है।
- **सकारात्मक कक्षा संस्कृति :** कक्षा का वातावरण विद्यार्थियों के आत्म–अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सहभागिता के अवसर, आपसी सम्मान और समता के मूल्यों से युक्त होना चाहिए। जब विद्यार्थी बिना डर के प्रश्न पूछ सकते हैं, अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं और समूह गतिविधियों में भाग ले सकते हैं, तब उनके भीतर आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की भावना प्रबल होती है।
- **प्रेरक मूल्यांकन पद्धति :** यदि विद्यालय में विद्यार्थियों का मूल्यांकन केवल अंकों और परीक्षाओं पर आधारित हो, तो वे असफलता के भय से आत्मविश्वास खो सकते हैं। इसके विपरीत, जब मूल्यांकन बहुआयामी, विकासोन्मुख और प्रोत्साहन आधारित होता है, तब विद्यार्थी अपनी क्षमताओं को पहचानते हैं और उनमें सुधार की प्रवृत्ति विकसित होती है।
- **सहपाठी संबंध और सहयोग :** विद्यालयी वातावरण में सहपाठियों के बीच सहयोग, समन्वय और पारस्परिक सम्मान का भाव होना चाहिए। यदि विद्यार्थी समूह कार्यों में मिलकर काम करते हैं, तो उनमें सामूहिकता की भावना के साथ–साथ आत्मविश्वास भी विकसित होता है। तिरस्कार, उपहास या भेदभावयुक्त व्यवहार आत्मविश्वास को नष्ट कर सकते हैं।
- **सांस्कृतिक एवं सह–पाठयक्रम गतिविधियाँ :** विद्यालयों में होने वाली सह–पाठयक्रम गतिविधियाँ जैसे– वाद–विवाद, भाषण, नाटक, संगीत, चित्रकला, खेलकूद आदि आत्म अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम होते हैं। जब विद्यार्थी मंच पर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं या किसी गतिविधि में नेतृत्व करते हैं, तो वे आत्म गौरव अनुभव करते हैं, जो आत्मविश्वास के विकास का आधार बनता है।
- **शारीरिक और मानसिक सुरक्षा का वातावरण :** विद्यालय में यदि विद्यार्थियों को शारीरिक एवं भावनात्मक रूप से सुरक्षित वातावरण मिलता है, जहाँ उन्हें डर, धमकी या उपेक्षा का सामना

नहीं करना पड़ता, तो वे मानसिक रूप से सशक्त होते हैं। सुरक्षा की यह भावना उन्हें स्वयं के प्रति विश्वास दिलाती है।

- **विद्यालय प्रशासन की भूमिका :** विद्यालय प्रशासन यदि विद्यार्थी केंद्रित, लोकतांत्रिक और समावेशी होता है, जहाँ विद्यार्थियों की बातों को सुना जाता है, सुझावों को महत्व दिया जाता है और निर्णयों में उनकी भागीदारी होती है, तो वे स्वयं को महत्वपूर्ण और सक्षम समझते हैं, जिससे आत्मविश्वास को बल मिलता है।

निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में आत्मविश्वास एक केंद्रीय और निर्णायक तत्व के रूप में कार्य करता है। यह आत्मविश्वास न केवल उनकी शैक्षिक उपलब्धियों का निर्धारक होता है, बल्कि उनके सामाजिक व्यवहार, भावनात्मक संतुलन और भविष्य के जीवन लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में भी मार्गदर्शन करता है। आत्मविश्वास का विकास केवल व्यक्ति की आंतरिक क्षमताओं या पारिवारिक परिवेश से ही नहीं, बल्कि विद्यालयी वातावरण से भी गहराई से जुड़ा होता है। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित करता है। जब विद्यालय में विद्यार्थियों को एक सहयोगात्मक, प्रेरक, सुरक्षित और संवादात्मक परिवेश प्राप्त होता है, तब वे स्वयं को अभिव्यक्त करने, चुनौतियों का सामना करने और नवाचार अपनाने के लिए मानसिक रूप से तैयार पाते हैं। ऐसे वातावरण में छात्र–छात्राएँ अपनी क्षमताओं को पहचानते हैं और अपने भविष्य के प्रति आश्वस्त रहते हैं।

विद्यालय का शैक्षिक वातावरण, जिसमें शिक्षक का सकारात्मक दृष्टिकोण, प्रेरणादायक शिक्षण विधियाँ, समतामूलक व्यवहार और विद्यार्थी केंद्रित गतिविधियाँ शामिल होती हैं, आत्मविश्वास को पुष्ट करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होता है। जब शिक्षक विद्यार्थियों की बातों को सुनते हैं, उन्हें प्रोत्साहित करते हैं, सफलताओं की सराहना करते हैं और असफलताओं में भी सुधार की संभावना दिखाते हैं, तब विद्यार्थियों के भीतर आत्म–स्वीकृति और आत्म–सम्मान का भाव विकसित होता है। सहपाठी संबंध, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, प्रेरक मूल्यांकन प्रणाली, स्वच्छ एवं सुरक्षित विद्यालय परिसर, और प्रशासन की भागीदारीपूर्ण नीति जैसे तत्व भी विद्यालयी वातावरण को समृद्ध बनाते हैं, जो विद्यार्थियों के आत्मविश्वास विकास में सहायक होते हैं। इसके विपरीत, विद्यालय में भय, उपेक्षा, कठोर अनुशासन, भेदभाव या संवाद की कमी आत्मविश्वास को बाधित कर सकती है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा

सकता है कि यदि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने वाला, उनकी क्षमताओं को स्वीकारने वाला तथा उन्हें प्रोत्साहन देने वाला हो, तो आत्मविश्वास जैसे महत्वपूर्ण गुण का समुचित विकास संभव है। आत्मविश्वासी विद्यार्थी ही आगे चलकर निर्णयशील, उत्तरदायी, आत्मनिर्भर तथा सफल नागरिक बन सकते हैं।

सुझाव

- शिक्षकों को विद्यार्थियों की भावनाओं को समझने वाला, प्रेरणादायक और सहायक व्यवहार करना चाहिए।
- गलतियों पर दंड की बजाय सुधार के अवसर दिए जाएँ।
- विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, उत्तर देने एवं विचार रखने का अवसर दिया जाए।
- सहयोगी एवं संवादात्मक शिक्षण पद्धतियाँ अपनाई जाएँ।
- वाद–विवाद, भाषण, चित्रकला, नृत्य, संगीत, खेल आदि में भागीदारी से आत्म–अभिव्यक्ति को बढ़ावा दिया जाए।
- मंच पर बोलने व नेतृत्व का अवसर सभी विद्यार्थियों को मिले।
- केवल अंक आधारित मूल्यांकन के बजाय प्रगति, प्रयास व रचनात्मकता को महत्त्व दिया जाए।
- निराशाजनक टिप्पणी के बजाय रचनात्मक सुझाव दिए जाएँ।
- जाति, लिंग, सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव से बचा जाए।
- छात्रावास व कक्षा में शारीरिक व मानसिक सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Anjum, N., & Bhat, S. A. (2022). School climate and self-esteem of secondary school students. International Journal of Food and Nutritional Sciences, 11(11), 18343–18353.
2. Arellano, et al. (2023). Students' ratings of school climate as a moderator between self-esteem and internalizing symptoms in a community-based high school population. Psychology in the Schools, 60(11), 4701–4720. https://doi.org/10.1002/pits.22999
3. Dudovitz, R. N., et al. (2021). The longitudinal relationship of school climate with adolescent social and emotional health. BMC Public Health, 21, Article 19. https://doi.org/10.1186/s12889-021-10245-6
4. Kumar, M., & Namdev, R. P. (2026). The impact of school environment on the mental health of secondary school students. Indian modern education, 44(3), 78–94. https://doi.org/10.64742/kmxzcj40

5. Kushwaha, S., & Chaudhary, S. (2024). A Study of the Correlation Between School Environment and Academic Adjustment Among Secondary-Level Students. Journal of Humanities and Applied Sciences.
6. Podiya, J. K., Navaneetham, J., & Bhola, P. (2025). Influences of school climate on emotional health and academic achievement of school-going adolescents in India: A systematic review. BMC Public Health, 25, Article 54. https://doi.org/10.1186/s12889-024-21268-0
7. Savita, & Singh, B. (2024). Study of the effect of school environment on the educational achievement of students studying at secondary level. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 5(6). https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.5088
8. Scherrer, V., Hank, P., & Preckel, F. (2023). Development of adolescents' self-esteem and general academic self-concept: Perceived classroom climate makes a difference. European Journal of Personality, 37(6). https://doi.org/10.1177/08902070221126789
9. Verner-Filion, J., Véronneau, M.-H., Vaillancourt, M.-C., & colleagues. (2023). Perceived school climate and school grades in secondary school students: The mediating effect of self-determined motivation. Contemporary Educational Psychology, 74, Article 102202. https://doi.org/10.1016/j.cedpsych.2023.102202
10. Zysberg, L., & Schwabsky, N. (2021). School climate, academic self-efficacy and student achievement. Educational Psychology, 41(4), 467–482. https://doi.org/10.1080/01443410.2020.1813690